National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 15-06-2025, Accepted: 15-07-2025, Published: 30-07-2025
Volume 10, Issue 3, 2025, Page No. 34-37

उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ० मान सिंह[1], प्रियंका सिंह[2]
[1] आचार्य, शिक्षक–शिक्षा विभाग, सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा शिक्षाशास्त्र, शिक्षक–शिक्षा विभाग, सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक रूप से विश्लेषण करना है। वैश्विक महामारी कोविड–19 के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण एक महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरा है, जिसने परंपरागत शिक्षण पद्धति को एक नवीन दिशा दी है। इस परिवर्तन के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया उनकी बौद्धिक क्षमताओं के अनुसार भिन्न हो सकती है। इस अध्ययन में बुद्धिलब्धि के विभिन्न स्तरों (उच्च, मध्यम और निम्न) के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति रुचि, सहभागिता, सीखने की तत्परता, तकनीकी अनुकूलन क्षमता तथा समग्र दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है।
शोध प्रक्रिया के अंतर्गत विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का परीक्षण मनोवैज्ञानिक मानकों द्वारा किया गया तथा ऑनलाइन शिक्षण के प्रति उनकी अभिवृत्ति को ज्ञात करने हेतु एक स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण में अधिक आत्मनिर्भर, तकनीकी रूप से दक्ष एवं अनुकूलनशील दिखाई दिए, वहीं मध्यम बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मिश्रित रही, जिसमें कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ देखी गईं। इसके विपरीत, निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षण को जटिल, रुचिहीन तथा कम प्रभावशाली माना, जिससे उनकी सहभागिता एवं सीखने की गति प्रभावित हुई।
अतः यह स्पष्ट होता है कि बुद्धिलब्धि का स्तर ऑनलाइन शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। यह अध्ययन नीति निर्धारकों, शिक्षाविदों एवं पाठ्यक्रम निर्माताओं को यह संकेत देता है कि ऑनलाइन शिक्षण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने हेतु विद्यार्थियों की बौद्धिक विविधता को ध्यान में रखकर शिक्षण विधियों एवं तकनीकी संसाधनों का चयन किया जाना आवश्यक है।

मूल शब्दः बुद्धिलब्धि,माध्यमिक विद्यालय, ऑनलाइन शिक्षण, अभिवृत्ति,मध्यमान,मानक विचलन,क्रांतिक अनुपात इत्यादि

प्रस्तावना
वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत व्यापक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं, विशेषतः कोविड–19 महामारी के पश्चात ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली ने एक आवश्यक विकल्प का रूप ले लिया है। ऑनलाइन शिक्षा ने भौगोलिक सीमाओं को लांघते हुए विद्यार्थियों को घर बैठे ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। हालांकि, यह परिवर्तन सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से अनुकूल नहीं रहा है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जो शैक्षणिक रूप से संवेदनशील अवस्था में होते हैं, उनकी सीखने की क्षमता, अभिरुचि तथा तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता जैसे अनेक कारकों पर ऑनलाइन शिक्षण की प्रभावशीलता निर्भर करती है। विशेष रूप से विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एक ऐसा प्रमुख मनोवैज्ञानिक पक्ष है, जो उनके शिक्षण–अधिगम व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की सोचने, समझने और सीखने की प्रवृत्ति भिन्न होती है, अतः उनके द्वारा ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अपनाई जाने वाली अभिवृत्तियाँ भी भिन्न हो सकती हैं।
इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह है कि विभिन्न स्तर की बुद्धिलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति (।जजपजनकम) का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करेगा कि क्या बुद्धिलब्धि स्तर ऑनलाइन शिक्षण को लेकर विद्यार्थियों की रुचि, भागीदारी, संतोष तथा उसकी उपयोगिता की धारणा को प्रभावित करता है। साथ ही यह शोध यह भी स्पष्ट करेगा कि किन स्तर के बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम को अधिक स्वीकार करते हैं तथा किसे कठिनाई का अनुभव होता है। इस प्रकार यह शोध अध्ययन न केवल ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली की प्रभावशीलता के मूल्यांकन में सहायक होगा, बल्कि शिक्षा नीति निर्धारकों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण रणनीतियों के विकास में भी मार्गदर्शन प्रदान करेगा। अंततः यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में समावेशी, संतुलित एवं प्रभावशाली तकनीकी शिक्षण के विकास हेतु एक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व
ऑनलाइन शिक्षण वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य माध्यम बनकर उभरा है।खासतौर से कोविड–19 जैसे संक्रमण काल में शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों को पारंपरिक शिक्षण पद्धति से हटकर तकनीकी आधारित शिक्षण प्रणाली को अपनाना पड़ा। परंतु यह ध्यान देना आवश्यक है कि सभी विद्यार्थी समान मानसिक स्तर या बुद्धिलब्धि (फ्फ) के नहीं होते। उच्च, मध्यम और निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की सीखने की शैली, गति और समझने की क्षमता भिन्न होती है, जिससे यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि वे ऑनलाइन शिक्षण के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं।
यह अध्ययन इस कारण भी आवश्यक है कि यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि विभिन्न स्तर की बौद्धिक क्षमताओं वाले छात्र ऑनलाइन शिक्षा को किस दृष्टिकोण से ग्रहण करते हैंकृ

क्या वे इसे सहज और लाभकारी पाते हैं, या इसमें उन्हें कठिनाइयाँ आती हैं। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं और नीति–निर्माताओं को इस दिशा में सूचित निर्णय लेने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगा कि ऑनलाइन शिक्षण को किस प्रकार अधिक समावेशी, उपयोगी और प्रभावी बनाया जा सकता है।

इस शोध का शैक्षिक महत्व इस बात में निहित है कि इसके निष्कर्षों के आधार पर ऑनलाइन शिक्षण की रणनीतियों को बुद्धिलब्धि के विभिन्न स्तरों के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है, जिससे समावेशी शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। यह अध्ययन भविष्य की ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अधिक वैज्ञानिक, बाल–मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक रूप से सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक सशक्त प्रयास सिद्ध हो सकता है। इसके माध्यम से यह भी स्पष्ट हो सकेगा कि किन विद्यार्थियों को अतिरिक्त मार्गदर्शन, तकनीकी सहायता या वैकल्पिक शिक्षण विधियाँ उपलब्ध कराना आवश्यक है। कुल मिलाकर, यह अध्ययन 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावशाली और समान अवसर प्रदान करने वाली बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है ।

सम्बंधित साहित्य

कुलदीप सिंह (2024) "कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन सीखने के प्रति माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन" वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य कोविड–19 में ऑनलाइन सीखने के प्रति माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है । इस अध्ययन में 430 छात्रों का ऑनलाइन शिक्षण के प्रति रुझान निर्धारित करने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया। ई–लर्निंग के प्रति दृष्टिकोण द्वारा विकसित स्केल का उपयोग डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था। अध्ययन के निष्कर्षों से यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग के संबंध में ऑनलाइन सीखने के प्रति दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अध्ययन के निष्कर्षों से और भी पता चलता है कि स्थानीयता का ऑनलाइन सीखने के प्रति छात्रों के रवैये पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के निष्कर्षों का विश्लेषण किया गया है कि शिक्षा छात्रों के साथ–साथ राष्ट्रों के सर्वांगीण और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

गंगवार एवं गंगवार (2022) ने "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया प्रस्तुत शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । यह अध्ययन बरेली मंडल के पीलीभीत जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर किया गया है। इस अध्ययन हेतु नसरीन और फातिमा इसलानी की शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी मापनी का उपयोग किया गया है । अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 50 शहरी तथा 50 ग्रामीण शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन के उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना एवं माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व सरकारी शहरी विद्यालयों के शिक्षको की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन की परिकल्पनाएं माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व सरकारी शहरी विद्यालयों के शिक्षको की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। निष्कर्ष रूप उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का स्तर समान पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन के निम्नवत उद्देश्य हैं

1. उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें – प्रस्तुत अध्ययन निम्न शून्य परिकल्पनाओं के अंतर्गत सम्पादित किया गया है

1. उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में मऊ जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी शोध की जनसंख्या होंगें ।

न्यादर्शन

प्रस्तुत शोध अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रतिदर्श के रूप में मऊ जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण

ऑनलाइन शिक्षण के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मापन हेतु स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है ।इस मापनी में कुल पाँच आयामों जैसे– तकनीकी सुविधा एवं सुलभता, शिक्षक–शिक्षार्थी संवाद, अध्ययन की प्रभावशीलता, आत्म–अनुशासन एवं समय प्रबंधन, सामाजिक संपर्क एवं सहयोग

से सम्बंधित 50 (25 सकारात्मक व 25 नकारात्मक) कथनों का समावेश किया गया है । प्रत्येक कथन पर तीन बिंदु प्रतिउत्तर (सहमत ,अनिश्चित तथा असहमत) पर विद्यार्थियों से प्रतिक्रिया प्राप्त की गयी है ।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँप्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान ,मानक विचलन ,क्रांतिक अनुपात जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं के अंतर्गत सम्पादित किया गया है परिकल्पना 1–उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1– उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	96.00	3.10
मध्यम बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	91.22	2.81
निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	85.19	2.58

स्रोत (Source)	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	5868.85	2934.42	363.96	$F_{.05}(2,297)=3.04$ $F_{.01}(2,297)=4.71$
समूहों के अन्दर	297	2394.55	8.06		
कुल योग	299	8263.40			

उपरोक्त सारणी मान से यह ज्ञात होता है कि प्राप्त ए=363.96 का मान क(2,297) सार्थकता के .05 व .01 स्तर पर सार्थक होने के लिए आवश्यक न्यूनतम एफ मानों क्रमशः 3.04 व 4.71 से अधिक है ,अतः यह दोनों ही स्तरों पर सार्थक है। इस सार्थक एफ–अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि विभिन्न समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है अर्थात उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर है ।

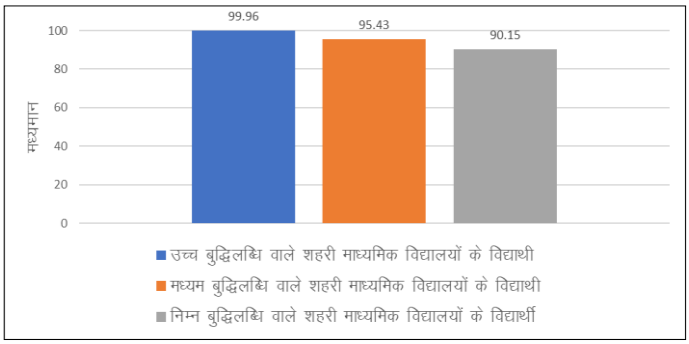

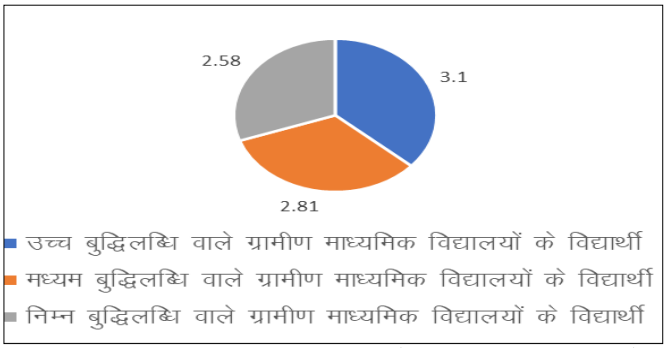

ग्राफ 1.1 उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

ग्राफ 1.2 उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण (मानक विचलन)

परिकल्पना 2–उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2– उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	99.96	3.10
मध्यम बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	95.43	2.51
निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	90.15	2.72

स्रोत (Source)	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	4821.18	2410.59	310.32	$F_{.05}(2,297)=3.04$ $F_{.01}(2,297)=4.71$
समूहों के अन्दर	297	2307.10	7.77		
कुल योग	299	7128.28			

उपरोक्त सारणी मान से यह ज्ञात होता है कि क्योंकि प्राप्त ए=310.32 का मान क(2,297) सार्थकता के .05 व .01 स्तर पर सार्थक होने के लिए आवश्यक न्यूनतम एफ मानों क्रमशः 3.04 व 4.71 से अधिक है ,अतः यह दोनों ही स्तरों पर सार्थक है। इस सार्थक एफ–अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर है।

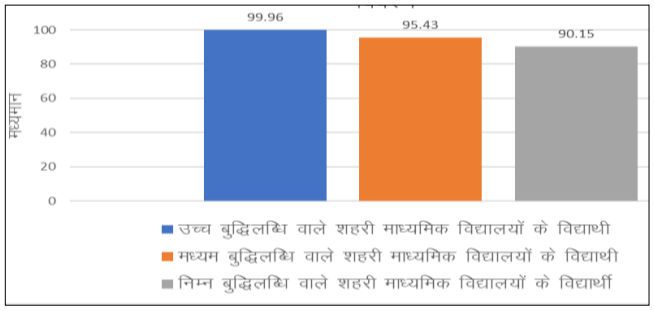

ग्राफ 2.1 उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

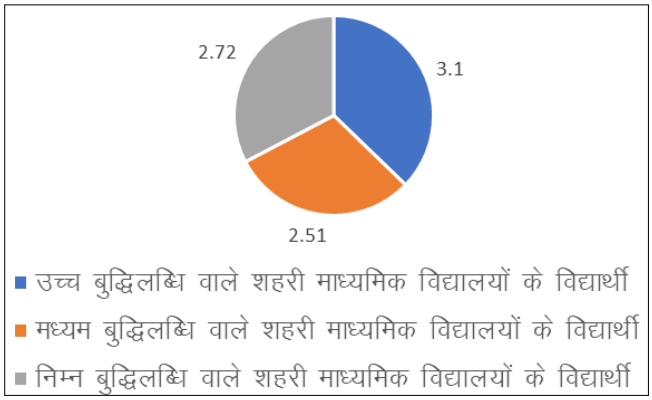

ग्राफ 2.2 उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण (मानक विचलन)

निष्कर्ष

''उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर है'' से संबंधित परिकल्पना का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का स्तर उनकी ऑनलाइन शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण एवं व्यवहार को प्रभावित करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। वे तकनीकी उपकरणों का बेहतर उपयोग करते हैं, स्वयं अध्ययन की प्रवृत्ति रखते हैं तथा डिजिटल माध्यमों से प्राप्त जानकारी को शीघ्र समझने में सक्षम होते हैं। इसके विपरीत निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों को ऑनलाइन माध्यम को समझने, उससे लाभ लेने एवं उसमें रुचि बनाए रखने में कठिनाई होती है, जिससे उनकी अभिवृत्ति अपेक्षाकृत नकारात्मक पाई गई। मध्यम बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की अभिवृत्ति दोनों वर्गों के मध्य में रही, जिनमें कुछ सीमित स्तर तक सकारात्मक झुकाव देखा गया। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से भी महत्त्वपूर्ण पाया गया, जो यह दर्शाता है कि बुद्धिलब्धि ऑनलाइन शिक्षण की स्वीकृति और उपयोगिता को प्रभावित करने वाला एक निर्णायक कारक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बुद्धिलब्धि के विभिन्न स्तरों वाले विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में स्पष्ट एवं सार्थक अंतर विद्यमान है।

''उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर है'' से संबंधित परिकल्पना का विश्लेषणात्मक परीक्षण उपरांत प्राप्त निष्कर्ष दर्शाते हैं कि बुद्धिलब्धि स्तर विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण, स्वीकार्यता एवं सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से पाया गया कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को अधिक सकारात्मक रूप में ग्रहण करते हैं, वे तकनीकी उपकरणों के प्रयोग में दक्ष होते हैं, स्वअधिगम हेतु प्रेरित रहते हैं तथा जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण नवीन शिक्षण माध्यमों को शीघ्र अपनाते हैं। इसके विपरीत, मध्यम बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मिश्रित पाई गई, जिनमें कुछ विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण को उपयोगी मानते हैं किंतु तकनीकी जटिलताओं एवं स्वयं को अनुशासित रखने में कठिनाई अनुभव करते हैं। वहीं, निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अपेक्षाकृत नकारात्मक पाई गई, क्योंकि वे तकनीकी सीमाओं, ध्यान की कमी, तथा स्वअध्ययन की न्यून प्रवृत्ति के कारण इस प्रणाली से अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं कर पाते। इस प्रकार, शोध से यह निष्कर्ष निकाला गया कि शहरी क्षेत्र में भी बुद्धिलब्धि का स्तर विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण एवं सार्थक अंतर उत्पन्न करता है, जिसे ध्यान में रखकर शिक्षण विधियों का चयन एवं क्रियान्वयन किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

शोध की शैक्षिक उपयोगिता

''उच्च, मध्यम एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' विषयक शोध की शैक्षिक उपयोगिता वर्तमान डिजिटल युग में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन शिक्षकों, शैक्षिक योजनाकारों, पाठ्यचर्या निर्माताओं तथा शिक्षा नीति निर्धारकों को यह समझने में सहायक सिद्ध होता है कि विभिन्न बुद्धिलब्धि स्तरों वाले छात्र ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को कैसे ग्रहण करते हैं। चूंकि ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर भिन्न रूपों में पड़ता है, अतः यह शोध यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार की शिक्षण विधियाँ उच्च, मध्यम या निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों के लिए उपयुक्त होती हैं। इसके परिणामस्वरूप शिक्षण प्रक्रिया को अधिक समावेशी, लचीला एवं प्रभावी बनाया जा सकता है। साथ ही यह शोध शिक्षकों को यह मार्गदर्शन प्रदान करता है कि वे छात्रों की अभिवृत्तियों के अनुसार शिक्षण रणनीतियाँ अपनाएं, जिससे उनकी सीखने की क्षमता में सुधार हो सके। यह अध्ययन डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने, शिक्षा में तकनीकी समावेशन को सुदृढ़ करने तथा शिक्षा में समानता सुनिश्चित करने की दिशा में भी एक सार्थक पहल है। संक्षेप में, यह शोध विद्यार्थियों की विविधताओं को समझते हुए एक समावेशी एवं उत्तरदायी ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सन्दर्भ –

1. शर्मा, आर. ए. (2021): शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया,आर० लाल० प्रकाशन, मेरठ ।
2. मिश्रा, एस. (2020): ऑनलाइन शिक्षण और सीखने के मनोवैज्ञानिक पहलू, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
3. शर्मा, आर. के. (2021): माध्यमिक शिक्षा में ई–लर्निंग की प्रभावशीलता, ज्ञानगंगा प्रकाशन, वाराणसी।
4. तिवारी, पी. (2019): विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और उनकी बौद्धिक क्षमताएँ, शैक्षिक शोध प्रकाशन, लखनऊ।
5. सिंह, वी. (2022): ऑनलाइन शिक्षाः चुनौतियाँ और संभावनाएँ, भारतीय शिक्षाविद् जर्नल, 15(2), 45–52।
6. कुमारी, एस. (2020): माध्यमिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रति छात्रों की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया, शिक्षा शोध पत्रिका, 10(1), 33–40।
7. यादव, एम. (2021): बुद्धिलब्धि के आधार पर छात्रों की सीखने की प्रवृत्तियाँ, भारतीय मनोविज्ञान समीक्षा, 17(3), 22–29।
8. गुप्ता, ए. (2023): ऑनलाइन शिक्षण के सामाजिक एवं भावनात्मक प्रभाव, केंद्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. अग्रवाल, आर. (2020): कोविड–19 के बाद का शिक्षा परिदृश्य, शिक्षा विमर्श, 12(4), 60–68।
10. वर्मा, एन. (2018): बुद्धिलब्धि परीक्षण और शिक्षण रणनीतियाँ, इंडियन एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।
11. चौधरी, एल. (2022): डिजिटल शिक्षण और छात्रों की अभिवृत्ति में संबंध का विश्लेषण, शैक्षिक परिप्रेक्ष्य जर्नल, 14(1), 50–57।